Topic 35 विसर्ग संधि - 3

'मनस् + रथः' इत्यत्र रुत्वे कृते 'हशि च' इत्युत्वे 'रो रि' इति लोपे च प्राप्ते।

विप्रतिषेधे परं कार्यम्।

तुल्यबलविरोधे परं कार्यं स्यात्। इति लोपे प्राप्ते 'पूर्वत्रासिद्धम्' इति 'रो रि' इत्यस्या- सिद्धत्वादुत्वमेव। मनोरथः।

यदि विभिन्न स्थलों पर चरितार्थ होने वाले दो सूत्र एक ही स्थल पर प्राप्त हो तो उनमें से परवर्ती (अष्टाध्यायी के क्रमानुसार) सूत्र ही प्रवृत्त होता है।

'मनर् + रथः' - इस स्थल पर 'हशि च' और 'रो रि', ये दोनों ही सूत्र प्राप्त होते हैं। 'आद् गुणः' से गुण एकादेश हो 'मन् ओ रथः = 'मनोरथः' रूप सिद्ध होता है।

एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि।

अककारयोरेतत्तदोर्यः सुस्तस्य लोपः स्याद्धलि, न तु नञ्समासे। एष विष्णुः। स शम्भुः। अकोः किम्- एषको रुद्रः। अनञ्समासे किम् - असः शिवः। हलि किम् - एषोऽत्र।

सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्।

स इत्यस्य सोर्लोपः स्यादचि, पादश्चेल्लोपे- सत्येव पूर्येत। सेमामविड्ढि प्रभृतिम्। सैष दाशरथी रामः।

P.T.O.

यह सूत्र पूर्वसूत्र का विस्तारक मात्र है। पूर्वसूत्र से हल् परे होने पर ही सु-लोप प्राप्त होता है, किन्तु प्रकृत सूत्र से अच् परे होने पर भी 'सस्' (तद्, के प्रथमा के एकवचन का रूप) के सु-लोप का विधान किया गया है। किन्तु यह सु-लोप तभी होगा जबकि उसके बिना पाद-पूर्ति सम्भव न हो।